“ दूसरों के कल्याण से बढ़कर
और दूसरा कोई नेक काम और धर्म नहीं होता”

लेखिका का परिचय

नाम : वन्दना रॉय

जन्म : 1950, राँची, झारखण्ड

शिक्षा : छोटानागपुर गर्ल्स हाई स्कूल से स्कूली शिक्षा, राँची वीमेन्स कॉलेज से बांग्ला ऑनर्स में स्नातक

रूचि : लेखन, संगीत, भ्रमण, नये लोगों से मिलना आदि

रचनाएँ : अभी तक कुछ पत्रिकाओं में बांग्ला, हिन्दी में कविता और प्रबन्ध का प्रकाशन। यह पहली पुस्तक है।

पता : पटना, बिहार

02042018

महान समाज सुधारक

पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

करमाटाँड़ प्रवास प्रसंग एवं संक्षिप्त परिचय

वन्दना रॉय

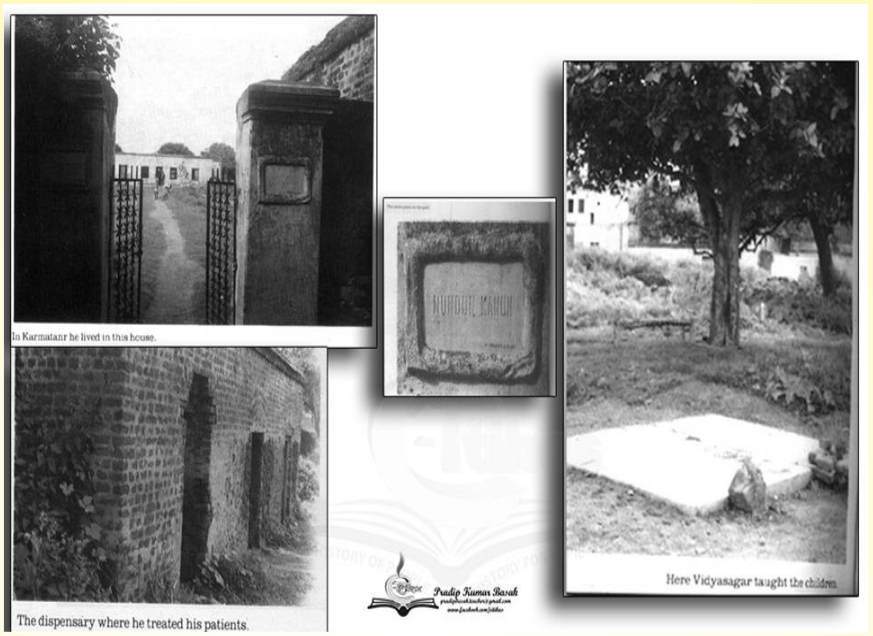

करमाटाँड़ स्थित पंडित जी की स्मृतियाँ

'नन्दनकानन' करमाटाँड़ स्थित पंडित जी की स्थापित प्रतिमा

संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता (अब कोलकाता)

चित्र : देवाशिष मिश्र

बादुड़बागान, कोलकाता स्थित विद्यासागर जी का निवास

पुस्तक का नाम	:	महान समाज सुधाकर : पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर : करमाटाँड़ प्रवास प्रसंग एवं संक्षिप्त परिचय
लेखिका	:	श्रीमती वन्दना रॉय
प्रकाशक	:	श्री देवाशिष मिश्र
© स्वत्त्वाधिकार	:	विद्यासागर स्मृति रक्षा समिति, करमाटाँड़ (विद्यासागर), जिला : जामताड़ा (झारखण्ड) पिन कोड - 815352
लेजर टाईप सेटिंग	:	श्री बालाजी कम्प्यूटर्स, जामताड़ा
आवरण पृष्ठ सज्जा	:	आलोक एवं आनन्द
मुद्रक	:	भारती प्रिन्टर्स, जामताड़ा
सहयोग राशि	:	₹ 25/-

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

1. विद्यासागर स्मृति रक्षा समिति, पंजीकृत कार्यालय, राममोहन राय सेमेनरी परिसर, डॉ० विधानचन्द्र रॉय पथ (खजांची रोड), पटना - 800 004, बिहार
2. विद्यासागर स्मृति रक्षा समिति, 'नन्दनकानन' करमाटाँड़ (विद्यासागर) जिला : जामताड़ा (झारखण्ड) पिन - 815352
3. सरस्वती साहित्य सदन, स्टेशन गेट के सामने, जामताड़ा-815351 (झारखण्ड)

परम आदरणीय **स्व० रवीन्द्रनाथ राय,** आई.पी.एस. आई.जी. बिहार पुलिस
एवं श्रद्धेया ममतामयी **श्रीमती सुधा रानी राय**
को सादर समर्पित

– वन्दना रॉय

निवेदन

हमबांग्लाभाषियोंमेंसेजोकोईभीआजशिक्षाप्राप्तकरशिक्षक,अध्यापक, कलाकार,साहित्यकार,कवि,चिकित्सक,इंजीनियर,नाटककारयाजिसकिसीआर " क्षेत्रमेंहीक्योंनहों ईश्वरचन्द्रविद्यासागर 'महाशयकेहमसभीसर्वदाऋणीरहेंगे,वे हमसबकेआदिशिक्षागुरूहं ",उनकायहऋणहमसबकभीचुकानहींपायेंगे।मेरी यहचेष्टामात्रउनकेप्रतिएकसामान्यगुरू-दक्षिणाह। " इसलेखनीसेअगरकुछ संख्यकलोगभीलाभान्वितहुएतोमं "अपनेइसकार्यकोसफलमानूँगी।

मैंकाफीसालोंसेअपनीभावनाओंकोसंजोकरलिखतीआईहूँ,परउन्हें कभीप्रकाशमेंलानेकीचेष्टायाइच्छाउत्पन्ननहींहुई।लेकिनफिरभीमेरेभ्रातृतुल्य प्रणतिरॉयएवंबिहार-बंगालीसमितिकेश्रीविश्वनाथदेवमहाशयकेप्रोत्साहनसे मेरीकुछलेखआर " कविताएँप्रकाशितहुईं।जामताड़ाके' श्रीदेवाशिषमिश्र 'महोदय नेजबमुझेश्रीईश्वरचन्द्रविद्यासागरमहाशयजीसेसम्बन्धितहिन्दीभाषामेंएक पुस्तकलिखनेकोकहातोमुझेलगाकियहमेरेजीवनकासर्वश्रेष्ठकार्यहोगा;आर " मैं इसकार्यकोकरनेकेलिएप्रवृत्तहुई।मं "नेअपनेइसकार्यमेंतीनपुस्तकोंकीसहायता लीहै - (1)विद्यासागररचनासंग्रहप्रथमखण्ड-शिक्षा

(2)शम्भूचन्द्रविद्यारत्नलिखित,विद्यासागरजीवनचरितआर " भ्रमनिवास

(3)डॉ०प्रशान्तकुमारमल्लिकलिखित' करमाटाँड़सेविद्यासागर'

इनसबोंकोमं "धन्यवाददेतीहूँआर " सहृदयसेउन्हेंप्रणामकरतीहूँ।मेरेइस कार्यमेंमेरेपतिश्रीआशीषरॉयनेबहुतसहायताआर " सहयोगकीह; " मेरीपुत्रीअपूर्वा सेनगुप्ताऔरे पुत्रअनिन्दोरॉयनेबहुतप्रोत्साहनदियाह। " हिन्दीमेंइसलेखको रूपान्तरितकरनेमेंमेरीपुत्रीअपूवनिमेरीबहुतसहायताकीह। " उनकेप्रतिमेरासहृदय प्रेमएवंस्नेहाशीष।यदियहपुस्तकप्रकाशितहोकरआमलोगोंद्वारासर्वकार्यग्रहण करनेयोग्यहुईतोमेरायहप्रयाससार्थकहोजायेगा।मं "सर्वोपरिश्रीदेवाशिषमिश्र महोदयकोअसंख्यधन्यवाददेतीहूँजिन्होंनेमुझेयहअवसरप्रदानकिया।

वन्दना रॉय

कैप्टन डॉ० दिलीप कुमार सिन्हा की कलम से...

विद्यासागरकोजिसकिसीभीमानकसेतुलना कियाजाये,वेएकमहापुरुषहीसाबितहोंगे।आजशिक्षा के जगत में हम जितना भी आगे बढ़ पाये हं ै उसकी आधारशिलासन्1954मेंविद्यासागरनेहीरखाथा।जिस समयनारीशिक्षितहोनेपरअपनेपतिकीमृत्युकेकारण बनेगीऐसाविश्वासकरायागयाथा।विद्यासागरनेबथ ैुन साहब को सहायता किया बालिकाओं के लिए पहला विद्यालयखोलनेकेलिएअपनेपांडित्यआर ै तर्कसेब्रितानीसरकारकुछबालिका विद्यालयोंकाआर्थिकभारवहनकरनेसेकतरानेलगेतोउन्होंनेअपनेसीमितआर्थिक संगतिसेहीउनविद्यालयोंकोबनानेकाबीड़ाउठायाआर ै पूराकिया।

श्रीराममोहनरॉयनेसतीप्रथापरकानूनीरोकजरूरलगवायाथालेकिन विधवाओं की जिन्दगी अभिशप्त ही रही। विधवाओं का पुनर्विवाह हिन्दू धर्म के विरूद्धमानाजातारहा।पंडितईश्वरचन्द्रनेनकेवलपराशरसंहिताएवंअन्यशास्त्रों केपन्नोंकोखोलकरदिखायाबल्किमानवताकापाठभीपढ़ाया।विधवाविवाहको कानूनीमान्यतामिली।विधवाओंकोनयेसिरेसेजिन्दगीशुरूकरनेकाअवसरमिला; ऐसेथेविद्यासागर।नारियोंकीमुक्तिकेलिएईश्वरद्वाराभेजेगयेमुक्तिदूतजस ै ेथे।इन कार्योंसेनाखुशहिन्दूसमाजकेलोगउन्हेंइतनाअपमानितकियाकिविद्यासागरअपने घर–परिवार,अपनेपरिजनोंकोछोड़करकरमाटाँड़आगयेआर ै अपनीजिन्दगीके बहुमूल्य18सालबिताये।वहाँउन्होंनेआदिवासियोंकामार्गदर्शनकिया,बीमारपड़ने परइलाजभीकिया,खेतीकरनासिखाया।आदिवासीउन्हें ईश्वर देवताकहतेथे।

करमाटाँड़जैसे स्थानपरआनेसेविद्यासागरकेप्रतिश्रद्धासेमस्तकझुक जाताहै औरमनभावविभोरहोजाताह। ै ऐसासबकेसाथहोताह ै लेकिनकुछचन्द लोगहीअपनेइसभाव,श्रद्धाकोकागजपरउतारनेमेंसक्षमहोपातेहं ै।

श्रीमतीवन्दनारॉयउनचन्दभाग्यवानलोगोंमेंसेहं ैजिन्होंनेयहसम्भवकर दिखायाहै –मैं,उन्हेंबधाईदेताहूँ।

डॉ० दिलीप कुमार सिन्हा

प्रकाशक की बातें

पंडित ईश्वर चंद्र विद्यासागर : करमाटाँड़ प्रवास प्रसंग एवं संक्षिप्त परिचय :-

यह एक पुस्तक के रूप में श्रीमती वंदना राय द्वारा प्रस्तुत की गयी है। इसी के साथ विद्यासागर स्मृति रक्षा समिति द्वारा प्रकाशन का कार्य प्रारंभ हुआ। नंदनकानन करमाटांड़ में कार्य करते समय यह विचार आया कि हमें और अधिक लोगों तक पंडित विद्यासागर की जीवनी उनके आदर्श और उनके द्वारा किये गये कार्य को अधिक जन तक पहुँचाना होगा।

समिति के सभी अग्रजका स्नेह भाजन होना मेरा सौभाग्य है कि समिति ने इस पुनीत कार्य को करने का निर्णय लिया। कप्टन साहब डॉ० दिलीप कुमार सिन्हा सचमुच हमारे कप्टन हैं। मुझे हमेशा कहते हैं कि बड़ा सपना देखना चाहिए। वंदना दीदी नें इस कार्य को पुस्तक के स्वरूप में लाने का काम किया। उन्होंनें निष्ठापूर्वक परिश्रम के साथ इस पुस्तक का लेखन कार्य किया। समिति की ओर से उन्हें धन्यवाद देता हूँ। इस पुस्तक के सभी चित्र कप्टन दिलीप कुमार सिन्हा जी के संग्रह से प्राप्त हुआ है। श्री विद्युत पाल बाबू धन्यवाद के पात्र हैं कि जिन्होंनें इस पुस्तक की विषय की प्रमाणिकता को देखा। सेवानिवृत राष्ट्रपति पुरष्कृत शिक्षक श्री भूजेन्द्र 'आरत' बाबू ने पुस्तक संपादन का कार्य किये, उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ। श्री सच्चिदानन्द सिन्हा जी, श्री सुनिर्मल दास जी, श्री विश्वनाथ देव जी इस पुस्तक प्रकाशन में लगन से अधिक परिश्रम किये, उन्हें समिति की ओर से धन्यवाद देता हूँ।

भारती प्रिन्टर्स, जामताड़ा को धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने परिश्रम के साथ लाभ-हानि रहित स्थिति में मुद्रण का कार्य किया है।

यह पुस्तक अधिक जनों तक पहुँचे तभी इसकी सार्थकता सिद्ध होगी।

शुभकामना सहित!

(देवाशिष मिश्र)

गुरु प्रणाम

कहते हैं कि मातृ–ऋण एवं पितृ–ऋण कभी भी चुकाया नहीं जा सकता। इसी तरह का एक और ऋण है गुरू ऋण, जो हम चाह कर भी चुका नहीं सकते। हमारे माता–पिता हमें जन्म देते हैं, पर हमारे गुरू हमें ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर हमें एक नया जन्म देते हैं। औरों की तरह ही मुझे भी बुद्धि, शिक्षा, विद्या एवं ज्ञान की पहली पहचान विद्यासागर महाशय के साथ ही मिली। शैशव काल की वो पहली बांग्ला की 'अ', 'आ' उन्हीं की देन है। उनकी लिखी 'वर्णपरिचय' मेरी पहली पाठ्य पुस्तक थी। इसके बाद कितनी ही उनकी लिखी पुस्तकें हम सबने पढ़ीं।

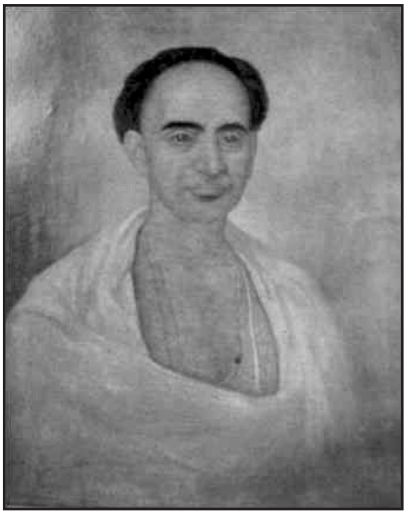

पिता : श्री ठाकुरदास बन्धोपाध्याय

माता : श्रीमती भगवती देवी

बांग्ला भाषा उस समय काफी कठिन एवं संस्कृत से अनुप्रेरित हुआ करती थी। तब उन्होंने यह ठान लिया कि इस भाषा को सहज, सरल और ग्रहण करने योग्य बनायेंगे; जिससे सर्वसाधारण लोग भी सहजता से इस भाषा को लिख–पढ़ सकेंगे; और उन्होंने वैसा ही किया।

गुरू ऋण हम कभी चुका नहीं सकते यह सत्य है पर यदि हम उनके द्वारा किये गये कर्म–काण्ड एवं कार्यों को जाने और कोशिश करें कि अधिक से अधिक लोग उससे अनुप्रेरित हों तो शायद हम कुछ हद तक अपने गुरू को संतुष्ट कर सकते हैं। मेरे द्वारा लिखी यह पुस्तक भी मेरे गुरू के प्रति 'गुरू–दक्षिणा' ही है।

मेराजन्मआरै विवाहबिहारमेंहुआह, ै मै बिहारकीबांग्लाभाषीहूँ।विद्यासागर महाशयकाहाथपकड़करमं ैइसीभाषाकोजानतेहुएआगेबढ़ीआर ै अपनीउम्रआर ै शिक्षा के चढ़ाव के साथ ही मुझे यह ज्ञान हुआ कि विद्यासागर महाशय जी के कर्म-काण्डसिर्फबांग्लाभाषातकहीसीमितनहींथे,बल्किउनकाचिंतनसमस्त मानवसमाजकेलिएथा ।मं ैबांग्लाभाषीहूँपरआजीवनबिहारवासीभीहूँ;यहींमेरा जन्मआरै विवाहहुआह।ै जबमं ैनेजानाकिइसीबिहारसेविभाजितहोकरझारखण्ड

करमाटाँड़ प्रवास के दौरान 'विद्यासागर' महाशय इसी भवन में निवास करते थे।
(इनसेट में मुख्य दरवाजे पर लगा बोर्ड जिसमें भवन का नाम 'नन्दन कानन' एक विशेष स्पेलिंग (NUNDUN KANUN) के साथ लिखी हुई है)

राज्यकेकरमाटाँड़(अबजिला:जामताड़ा)नामकस्थानपरविद्यासागरमहाशयने अपनेजीवनकेअन्तिम17सालबितायेथेतबमं ैयहजानकरहर ैानरहगयीआर ै फिर शुरूहुईमेरीबार-बारकरमाटाँड़जानेउन्हें,महसूसकरनेकासिलसिला ।हालाँकि आजकरमाटाँड़झारखण्डराज्यकाएकअंगह ै परइससेकोईबदलावनहींआयेगा; उनकेजैसे दिव्यव्यक्तित्वकोकोईभूमण्डलकाटुकड़ाअपनीसीमाओंमेंबाँधकर नहींरखसकता ।मं ैनेवहाँजाकरउनकीकईउपलब्धियोंकोजानापरवह्सबमुझ्तक हीसीमितनरहजायेयहख्यालभीआया ।करमाटाँड़मेंबसेजनसाधारणसेलेकर आजकीसारीयुवापीढ़ीउन्हेंजानेंयहआवश्यकह। ै अत:मं ैनेहिन्दीभाषाकेमाध्यम सेअपनीअभिव्यक्तिकोजनसाधारणतकपहुँचानेकासंकल्पलिया।

विद्यासागरमहाशयनसिर्फबंगभाषियोंकेहीआदिगुरूनहींथेबल्किसारेराष्ट्रके लिएउन्होंनेकुरितियोंकोसमाप्तकरनेकासंकल्पलेकरअपनाअभियानकिसप्रकार शुरूकियायहजाननाभीआवश्यकह। ै विद्यासागरमहाशयजीसम्पूर्णमानवजाति कोसमर्पितथे।समाजसंस्करण,शिक्षासंस्करण,धर्मकेनामपरअंधविश्वास, समाजमेंफलै ेकुसंस्कार,विधवाविवाह,बालविवाह,बहुविवाहविरोधजस ै ेउनके अनेककार्यसमाजकेप्रतिउनकीसंवेदनशीलसोचकोदर्शाताह। ै आधुनिकबांग्ला साहित्यकेलिएकियेगयेउनकेअवदानकेलिएविश्वककविरवीन्द्रनाथटग ै ोरजीने

संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता (अब कोलकाता)

उन्हें आदिकवि 'कानामदियाह। ै उन्हेंविद्याकासागर,दयाकासागरआर ै करूणा कासागरनामसेभीसंबोधितकियागयाह; ै परकविगुरूनेकहाह ै किउनकीअदम्य मानविकताहीउनकेचरित्रकाप्रधानगार ै व्है।

विद्यासागर एवं करमाटाँड़

भारतवासी,बंगवासी,बिहारवासी,झारखण्डवासियोंकेलिएगर्वहमारेपरम स्मरणीयसमाजसुधारकपण्डितईश्वरचन्द्रविद्यासागरनेअपनेजीवनकेशेषसत्रह साल' करमाटाँड़ 'के' नन्दनकानन 'में अपनेपिछड़ीजातियोंएवंआर्थिकरूपसे पिछड़ेलोगोंकीसेवामेंअपनेआपकोसमर्पितकरदियाथा।इसीनन्दनकाननमें पण्डितईश्वरचन्द्रविद्यासागरजीकेभूले-बिसरेयादोंकोफिरसेताजाकियाह ै : बिहार-बंगालीसमितिआरै झारखण्ड-बंगालीसमितिनेमिलकर' नन्दनकानन 'का पूरादायित्वबंगालीऐसोसिएशनपरदियाह। ै समाजकेहरव्यक्तिसेहमारीयहविनम्र अपीलहै किइसमहानसमाजसुधारककेकार्योंकीसार्थकताकेलिएजिससेजस ै । बनपड़ेअपनाबहुमूल्ययोगदानअवश्यदें।विद्यासागरजीकेअधिकांशपाठकोंको 'करमाटाँड़ 'कानामतोपताह ै परइसकाविस्तृतविवरणउपलब्धनहींह। ै विद्यासागर महाशयकाकरमाटाँड़आनास्थानीयलोगोंविशेषकरजन-जातीयभाषाबोलनेवाले लोगोंकोअपनीगोष्ठीमेंबुलाकरउन्हेंअपनापनदेनायहसबबहुतसेलोगोंकोनहीं पताहै। उन्हेंजाननेकेलिएउनकाजन्म,उनकेमाता-पिता,उनकीपढ़ाई,उनकीसोच, उनकाजीवनदर्शन,उनकीशिक्षा-नीतिसबकोजाननाजरूरीह। ै ठीकउसीतरह करमाटाँड़मेंउनकेजीवनकेआखिरीसत्रहसालकोभीजाननाजरूरीह। ै करमाटाँड़ उनके जीवन में महत्वपूर्ण पड़ाव रहा ह। ै इस स्थान को पूर्ण रूप से जान पाना बिहार-बंगालीसमितिकेआन्तरिकप्रयासोंकेकारणहीसम्भवहोपायाह; ै आरै हमारीयह' गुरूदक्षिणा 'काप्रथमप्रयासह। ै वेकरूणाकेसागर,दयाकेसागर कहलातेथे;लेकिनउनकाव्यक्तिगतजीवनबहुतहीदु:खमयथा।उनकेजीवनकाल में हीदेशवासियोंने उन्हें बहुत मान-सम्मान नहीं दिया। नारी शिक्षा, बहुविवाह, अवरोध,विधवाविवाहआदिकेद्वारासामाजिकपरिवर्तनकीजोचेष्टाउन्होंनेकीइन सबकेलिएउनपरप्रहारआर ै जानलेवाहमलाभीहुआ।उनकेजन्मस्थानबीरसिंह ग्रामकेलोगोंनेहीअपमानितकिया।यहाँतककीउन्हेंउनकेपरिवारकेलोगों, सगे-सम्बन्धीआरै यहाँतकपुत्रनेभीउन्हेंलांछितकिया।इसकेफलस्वरूपउनके जैसाकर्मठव्यक्तित्वभीआहतआर ै उदासीनहोकरसमाजकीमुख्यधारासेदूरजाकर करमाटाँड़ जैसै ीजगहको अपने निर्वासित जीवन को जीने के लिए चुना। उनके करमाटाँड़आनेकीघटनासेहीयहजाहिरहोताह ै किवेकिसीतीव्रवेदनाकेकारण हीशिक्षा,समाज,जन-कल्याणकोसमर्पितयहएकनेकइंसानअपनासबकुछत्याग

करकोलकातासेदूरकरमाटाँड़नामकजगहमेंआदिवासियोंकेबीचरहनेआतेहं ै।
यहभीकहाजासकताह ै किइनसरल,सहज,सहिष्णुलोगोंकेबीचआकरवेअपने
जीवनकेशेषसत्रह्सालउनकेबीचआनन्दपूर्वकबितादिया।

लेकिन यहाँ करमाटाँड़ में भी उनका कर्मजीवन कभी रूका नहीं। नई
भावनाएँ,चिंतन,मननएवंकार्यकुशलताचलतीरहीलेकिनकरमाटाँड़केलोगोंके
लिए।विद्यासागरजीकेजीवनपरबहुतसारेविद्वानोंनेसात्विकरूपसेकिताबलिखी
है परन्तुउनलेखोंमेंकरमाटाँड़काउल्लेखएवंउनकेजीवनकर्मकेसत्रह्सालनहींहं ै।
जबकि येही सत्रहसाल बहुत ही महत्वपूर्ण कालखण्ड हं ै। यहाँसे उन्होंने अपना
नवजीवनप्रारम्भकियाथा।इनआदिवासियोंकेसाथउनकाअपनेपनकाअटूटबन्धन
रहाइनसत्रहसालोंमें।जोव्यक्तिकभीअपनीआत्म-मर्यादाकोनहींभूला,कभी
अपमानसहननहींकिया,धनीलोगोंकीकभीखुशामदनहींकीउसेअपनेजीवनके
संतावनसालकीउम्रमेंटूटेहुएदिलआर ै थकेहुएशरीरकेसाथथोड़ी-सीशान्तिकी
खोजमेंकरमाटाँड़आनापड़ा।लेकिनयहाँपहुँचकरभीउन्हेंयहअहसासहुआकि
यहाँकेलोगभीउनकीहीप्रतीक्षाकररहेथे।इनसबोंकीसमग्रउन्नतिकाभारभी
विद्यासागरजीनेअपनेउपरलेलिया।बदलेमेंमिलाइनलोगोंकानिश्छलप्यारआर ै
स्नेह।जिससेकीउनकेमानसिककष्टकोकाफीराहतमिली।एकसमयऐसाभी
आयाकिवेइनसबोंकेअभिभावकबनगयेआर ै इनकेदु:खकोदूरकरनेकेलिए
स्वयंकोतन-मनसेसमर्पितकरदिया।1856सालमेंउससमयकेग्रेटरबंगालके
अन्तर्गतवीरभूमजिलासेअलगकर' जंगलमहल 'नामसेजानेजानावालापश्चिमी
भागसंतालपरगनाजिलाकेनामसेजानाजानेलगा।इसीकेअन्तर्गतमधुपुर,देवघर,
सिमुलतलाजैसे स्वास्थ्यप्रदस्थानोंकीतरह्हीकरमाटाँड़भीइसनक्शेमेंशामिलहुआ
जोआजझारखण्डराज्यकेजामताड़ाजिलाकाएकप्रखण्डह। ै करमाटाँड़नामकइस
स्वास्थ्यप्रदस्थानपरकहींजंगल,कहींमद ै ानचारोंतरफहरियालीकहींमिट्टीका
टिला,सहजतासेभोजनकोपचानेवालाजललोगोंकोसुस्वास्थ्यदेनेकेलिएयह
इलाकाजानाजाताथा।विद्यासागरमहाशयभीअपनेटूटेह्रदयआर ै थकेहुएशरीरको
ठीककरनेकीआशालेकरयहाँआयेथे।तबउनकीउम्रसंतावनसालकीथी;तभी
उनकेशरीरआरै मननेउनकासाथछोड़नाशुरूकरदियाथा।तबउनकामनचाहने
लगाथाकिएकऐसीशान्तिमयजगहजोसुन्दर,निर्जनआर ै स्वास्थ्यकरहो,जहाँवे
अपनाशेषजीवनशान्तिपूर्वकबीतासकें।उन्होंनेयहाँएक अंग्रेजमहिलासेतीन

एक ड़जमीनकेसाथएकसुन्दरघरखरीदा ।उन्होंनेइसकानामदिया' नन्दनकानन' ।
लेकिनउन्होंनेजमीनखरीदकरघरबनायाथायाघरकेसाथजमीनखरीदीथीइसबारे
में मतभेद ह ै विद्यासागर महाशय के पात्र " श्री संतोष कुमार अधिकारी ने अपने
'विद्यासागरेरशेषइच्छा'(विद्यासागरकीअंतिमइच्छा)नामकग्रंथमेंलिखाह " कि
अत्यन्तनिर्जनवस्वास्थ्यकरस्थानउन्होंनेखोजनिकालाथाजोतत्कालीनबिहारके
करमाटाँड़केरूपमेंजानाजाताह। " 1873-1874सालमेंउन्होंनेइसीकरमाटाँड़में
जमीनखरीदकररहनेलायकएकछोटा-साघरबनायाथा ।करमाटाँड़मेंउनकाजमीन
खरीदकरघरबनाना,कबआनाइनसबबातोंकोलेकरमतभेदह; " लेकिनकरमाटाँड़
मेंलम्बेसमयतकवेरूकेआर " जन-कल्याणकेकार्यकियेयहएकसच्चाईह। " श्री
सुकुमारसेनने' आधुनिकतममानुष-विद्यासागर 'नामकपुस्तकमेंलिखाह " कि
अपनेआखिरीवर्षोंमेंवेशहरवासीशिक्षितोंसेदु:खीहोकरगाँवमेंरहतेथे;लेकिन
उनकेबीचरहतेहुएभीकईतरहकेकार्योंमेंस्वयंकोसक्रियरखा ।उन्होंनेकभीभी
आलसीपनसेअपनाजीवननहींबिताया ।करमाटाँड़मेंभीउनकेआगमनकोलेकर
भीमतभेदरहाह।" भारतीयरेलकेअन्तर्गतपूर्वरेलवेकेआसनसोलरेलमण्डलके
अन्तर्गत करमाटाँड़ नामक जगह जो अब श्री विद्यासागर महाशय के नाम पर
'विद्यासागर 'स्टेशनकेरूपमेंजानाजाताह। " विद्यासागरस्टेशनकीदीवारपरएक
शिलालेखलिखाह " जिसमेंउन्होंनेजीवनकेदसप्रधानतत्वोंकाउल्लेखकियाह। "
इसमेंहीलिखाह " कि1874सालमेंवे(विद्यासागरमहाशय)करमाटाँड़आयेथे ।यह
शिलालेखदेखनेकेलिएहावड़ा-दिल्लीमेनरेललाईनमेंपूर्वरेलवेके अन्तर्गत
जामताड़ाएवंमधुपुरस्टेशनकेबीच' विद्यासागर 'स्टेशनकेप्लेटफॉर्मनं०-2के
स्टेशनमास्टरकेकार्यालयकेसमीपआनाहोगा ।वहाँ विद्यासागरएकनजर 'लिखा
हैं-प्रथमकारणव्यक्तिगतथा ।उन्होंनेअपनेशब्दोंमेंहीलिखाह " किवेसभीको
संतुष्टकरनेकेचक्करमेंकिसीकोभीसंतुष्टनहींकरपाये ।सांसारिकविषयोंमेंउन्हें
अपनेजैस ादु:खी आरै कोईइंसान नहीं मिला । सभी को संतुष्ट करने की उन्होंने
जी-जानसेचेष्टाकीपरअन्तमेंसमझमेंआयाकियेसबकुछभीकामनआया ।
सांसारिकलोगअपनेपरिजनोंसेजोस्नेहआर " अपनेपनकीअपेक्षारखतेहं "उसका
लेषमात्रभीउन्हेंनसीबनहींहुआ ।इसअवस्थामेंसांसारिकविषयोंमेंस्वयंकोलिप्त
रखकरस्वयंहीक्लेषभोगकरनामूर्खताहोती ।अनेककारणोंसेउनकामनविरक्तहो
उठाहोसम्पूर्णवर " ाग्यकीइच्छासेउन्होंनेसांसारिकविषयोंएवंलोगोंकेबीचरहनेकी

उनकीइच्छानहींरही।इसलिएउन्होंनेयहनिश्चयकियाकिजीवनकेशेषकालवेइन सबसेदूररहकरबितायेंगे।इनव्यक्तिगतकारणोंकेअलावाजोअन्यतथ्यमिलतेहं "उन परविवेचनाकरनेसेयहबातसामनेआतीह "-गुरूदक्षिणाउपलक्ष्यमेंप्रकाशितएक स्मारिकामेंश्रीगात" मचट्टोपाध्यायनेजिनतथ्योंकोरेखांकितकियाह "उसकेअनुसार करमाटाँड़एवंबाकीआदिवासियोंकाअंग्रेजोंकेकारणअत्याचारितजीवन,आर्थिक वसामाजिकदोनोंरूपोंसेसंग्राममेंपरिवर्तितहोरहाथा;इसदुर्व्यवस्थाकेसमय विद्यासागरमहाशयस्वेच्छासेकरमाटाँड़आकरदीन-दुखियोंआर "सतायेहुएलोगोंके साथस्वेच्छासेखड़ेहोगये।इनदुर्बलश्रेणीकेसाधारणलोगोंमेंउन्होंनेशिक्षाके प्रचार-प्रसारकेसाथ-साथउनकीचिकित्सकीयसेवाभीकी।इनकेअलावाभीएक औरकारणथाउनकारूग्णशरीर।करमाटाँड़आकरभीउन्हेंबार-बारअनेककार्यों औरचिकित्साकेलिएकोलकाताजानापड़ताथा;परजितनेभीसमयवेकरमाटाँड़में रहतेथेवेयहाँकेलोगोंकेलिएहीकार्यकरतेथे।वेयहाँकेगरीबलोगों आर " आदिवासियोंकेलिएजीवन्तदेवतातुल्यबनगयेथे।इसइलाकेकेलोगोंमेंशिक्षाके अभावऔरै विभिन्नबीमारियोंसेउन्हेंउबारकरस्वस्थजीवनदेनेकाकार्यविद्यासागर महाशयनेकिया।विद्यासागरमहाशयमिहिजाम,सिमुलतला,देवघर,झाझाजस " इलाकोंमेंगाँव-गाँवमेंघूमकरदु:खीलोगोंकीसेवाकियाकरतेथे।श्रीसिद्धार्थराय महाशयने27फरवरी2011केनन्दनकानन' गुरूदक्षिणाकेउपलक्ष्यमें 'प्रकाशित एकसमृद्धस्मारिकामेंलिखाह "किविद्यासागरजीकरमाटाँड़आकर1874सालमें 03एकड़जमीनखरीदी।करमाटाँड़रेलवेस्टेशनकेपासजिसकावर्तमानमेंनाम विद्यासागर स्टेशन ह"ै इसी जमीन पर उन्होंने घर बनाया जिसका नाम उन्होंने 'नन्दनकानन 'रखा।यहाँउन्होंनेबालिकाओंकेलिएस्कूल,बड़े-बूढ़ोंकेएकरात्रि पाठशालातथाआमजनोंकेलिएएकहोमियापथ "ीचिकित्सालयकीस्थापनाकी।वे आदिवासीसमुदायकेसंतालजन-जातिकेलोगोंकीसरलताकीबहुतप्रशंसाकिया करतेथेइससन्दर्भमेंडॉ०कप "टनदिलीपकुमारसिन्हाने2011मेंनन्दनकानन 'गुरूदक्षिणा 'केउपलक्ष्यमेंप्रकाशितस्मारिकामेंलिखाह "किवेनसिर्फकरमाटाँड़ के आदिवासियों के साथ ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण आदिवासी समाज के साथ घुल-मिलकररहनाचाहतेथे।उन्होंनेआदिवासीबालिकाओंकेलिएजोविद्यालय प्रारम्भकियावहशायदआदिवासीजन-जातिसमुदायकेलिएदेशमेंप्रथमविद्यालय था।वेबड़े-बूढ़ेलोगोंकोभीशिक्षितकरनाचाहतेथे।शहरीलोगोंकेव्यवहारसे दु:खीहोकरविद्यासागरमहाशयकरमाटाँड़केसरल,सहजआदिवासीलोगोंकेसाथ

गहरेआत्मीयसम्पर्कमेंजुड़गयेथे,वेउनकेदु:खसेदु:खीहोतेथेआर " उनकेसुखसे सुखी होते थे। अपने जीवन का एक बड़ा महत्वपूर्ण अध्याय उन्होंने करमाटाँड़ में बिताया था। वहाँके आदिवासियोंने उन्हें अपने परम आत्मीय स्वजन (परिजन) के रूपमें स्वीकार किया था। उन्होंने भी उनसबोंको अपना निकटतम परिजन माना था। इससन्दर्भमेंविभिन्नलेखकोंनेकरमाटाँड़मेंविद्यासागरमहाशयकेजीवनयापनकी विभिन्नघटनाओंकाविस्तारसेउल्लेखकियाह। " विद्यासागरजीकेपात्र " श्रीसंतोष कुमारअधिकारीनें विद्यासागरेरजीवनेरशेषदिनगुली '(विद्यासागरकेजीवनकेशेष दिन) नामकपुस्तक1983मेंलिखी। वेजबकरमाटाँड़गयेथे,तबवेवहाँविद्यासागर जी के घर गये तो वहाँ उन्हें विद्यासागर जी के कर्मचारी रहे अभिराम के पात्र " वृद्ध नाथूराममिले;उन्होंनेघरकेउत्तर-पूर्वकीओरएकचबूतरादिखायाआर " कहाकि विद्यासागरमहाशयय्हींबठै" तेथे,इसलिएवेयहाँरोजफूलचढ़ातेहं " ।तबसंतोषकुमार अधिकारीजीनेपूछाकिवेफूलक्योंचढ़ातेहं " ?तोहरै "ननाथूरामनेजवाबदियाकि विद्यासागरजीतोदेवताथेआर " देवताकोफूलकस " ेनचढ़ायें ?इसघटनासेयहबात परिलक्षितहोतीह " किकरमाटाँड़केसहज,सरललोगविद्यासागरमहाशयकोकिस दृष्टिसेदेखतेथे ?श्रीइन्द्रचन्द्रमित्रनेकरमाटाँड़मेंविद्यासागरप्रसंगमेंअपनेपुस्तक 'करूणाकेसागर-विद्यासागर 'मेंलिखाह " किउन्हेंयहाँकेलोगोंआर " आदिवासियोंसे स्नेहआरै लगावहोगयाथा;विद्यासागरजीकहतेथेकिआदिवासियोंसेबातकरना उन्हें अच्छा लगता ह; " क्योंकि वे सरल आर " सत्यवादी होते थे। आदिवासियों को वे दवाईयाँ,कपड़े,चावल,दाल,थाली,गिलासआदिजोभीजरूरतहोतीथीवेउन्हेंदेते थे।शिक्षाविस्तारमेंश्रीविद्यासागरजीकाआजीवनसंग्रामीभूमिकाकरमाटाँड़मेंभी समानरूपसेविद्यमानरहीथी।यहाँकेलोगोंएवंआदिवासियोंकोशिक्षाकाअलख जगानेमेंउन्होंनेअपनेअस्वस्थशरीरकोभीबीचमेंआड़ेआनेनहींदिया।करमाटाँड़ केलोगएवंआदिवासीउन्हेंअपनाप्रियजनमानतेथे;उन्हेंवेबहुतप्यारकरतेथे,उनसे वेअपनेपनकारिश्तारखतेथे।

करमाटाँड़ एवं बिहार बंगाली समिति

विद्यासागरमहाशयकेकरमाटाँड़कोसमाजनेदुबारापायाह। " बिहारबंगाली समितिकेविशेषप्रयाससेएवंउनकेसामूहिकउत्साहसेही' नन्दनकानन 'वापस मिलाआरै करमाटाँड़स्टेशनकानामउनकेनामपर' विद्यासागर 'हुआ।विद्यासागरजी केजीवनमेंउनकाकरमाटाँड़प्रवासबहुतहीमहत्वपूर्णअध्यायथा।उन्होंनेअपने हाथोंसेनन्दनकाननकोसजाया-सँवाराथा।अनेकपेड़-पाध " ेलगायेथे,परउनकेचले

जानेकेबादसबकुछसान् ै दर्यविहीनहोगया ।आदिवासियोंकेजीवन्तदेवताचलेगये थे,वेसबअत्यन्तदु:खीआर ै मर्माहतथे ।विद्यासागरजीद्वाराशुरूकियेगयेसब अभियान एवं जनसेवा मूलक कार्य कलाप बन्द हो गये थे । बालिका विद्यालय, प्रौढ़शिक्षाकार्यक्रम,होमियोपै थकचिकित्सालयसबबन्दहोगया,यहाँकेलोगस्तब्ध होगयेथेउनकेचलेजानेसे ।कुछसालबीततेहीउनकेपुत्रनारायणने1899सालमें नन्दनकाननकोकोलकाताकेपाथोरियाघाटानिवासीमल्लिकपरिवारकोबेचदिया था ।नारायणनेअपनेदेवतुल्यपिताकेअंतिमस्मृतियोंकोसंजोकररखनाजरूरीभी नहींसमझा ।मल्लिकपरिवारनेनन्दनकाननकोअपनेप्रयोजनोंमेंइस्तेमालकरना शुरूकरदियाथा,जिसकीवजहसेविद्यासागरजीकीसारीयादेंधीरे-धीरेमिटनेलगी थीं ।यहबहुतदुखदबातथीकिविद्यासागरजीकीअंतिमस्मृतियोंकीरक्षाकरनेउनके परिजन,मित्रआरै परिवारकाकोईभीसदस्यआगेनहींआया ।करमाटाँड़केहीकुछ अनुरागीलोगएकजुटहोकरविद्यासागरजीकीस्मृतियोंकीरक्षाकेलिएआगेआये । विद्यासागरजीकेनिधनकेछत्तीससालबाद1928सालमेंवर्तमानकरमाटाँड़रोडमें स्थित सरस्वती शिशु मन्दिर के पास ही ' विद्यासागर लाईब्रेरी ' का निर्माण हुआ । स्थानीयनिवासीश्रीमतीनागेन्द्रबालाघोषनेइसकेलिएअपनीजमीनदानदी ।सर हरिशंकरपाल,श्रीसत्यकेतुदत्त,श्रीबटबिहारीबसुएवंश्रीनागेन्द्रनाथसिन्हानेइस कार्य के सम्पूर्णता के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी । 1937 साल में विद्यासागरलाईब्रेरीभवनमेंस्थापितहुआ' नवगार ै विद्यालय ' ।1945सालमेंलाईब्रेरी भवनकेदूसरेतलेपरनिर्मितहुआ' विद्यासागरहॉल ' ।ठीकतरहसेरेख-रखावनहींहो पानेकीवजहसेसबकुछनष्टहोगया,बससस्मृतियोंमेंरहगयीएकपत्थरपरलिखी शिलालेख' विद्यासागरलाईब्रेरी ' ।नवगार ै विद्यालयएवंविद्यासागरहॉलइसीतरह दीर्घकालसेउपेक्षितरहनेकेकारणभग्णावस्थामेंपहुँचगया ।1938सालमेंगठित हुआ - बिहार बंगाली समिति । इन लोगों ने बिहार में बसने वाले बंगालियों की समस्याओंकासमाधानकरना,बंगलाभाषाकीउन्नतिकेलिएसार्थकप्रयासकरना, बहुतसारेसार्थककार्यकरना,बंगालीसमितिकेस्थापनाकेप्राय:चां ै तीससालबाद समिति के सत्प्रयासों से कोलकाता के पाथोरियाघाटा निवासी मल्लिक परिवार से ' नन्दनकानन 'कोपुन:ख़रीदकरसामाजिकजीवनमेंउसकीपुनर्प्रतिष्ठाकीआर ै फिर शुरूहुआविद्यासागरजीस्मृतिरक्षाकामहानकार्य ।1972सालकेसितम्बरमहीनेमें बिहार-बंगाली समिति ने इस ऐतिहासिक महान कार्य को कर समाज में इसकी पुनर्प्रतिष्ठा की । श्री नरेन्द्र नाथ मुखर्जी द्वारा लिखित ' नन्दनकानन सोम्पोर्क ' की

प्राथमिकतथ्योंकीखोजसेयहजानागयाकिडॉ०एस०एम०घोषाल,श्रीनरेन्द्रनाथ मुखर्जी एवं प्रो० गुरूचरण सामंत द्वारा तीन दिनों तक (20-09-1972 से 22-09-1972तक)अथकप्रयासकेबादवेनन्दनकाननकीवास्तविकखोजकर पानेमेंसफलहुए।नन्दनकाननपहुँचकरहीउन्हेंयहपताचलाकीयहाँगृहरक्षकके रूपमेंश्रीकार्तिकचन्द्रमण्डलतन ै ातहै।वेइसघरमेंरहतेथे,देखभालकरतेथे, जमीनमेंजोभीऊपजहोतीथीउसीसेवेअपनागुजरबसरकरतेथेआर ै वहींरहतेथे। उसघरमेंग्यारहकमरेहं ै;लेकिनदरवाजा-खिड़कीनहींह, ै सबचोरीहोगयेहं ै। वर्तमानमेंवहाँदस-ग्यारहबीघाजमीनह। ै श्रीनरेन्द्रनाथमुखर्जीकोइन्हींव्यक्तिसे यहपताचलाकिइसघरकेवर्तमानमालिकश्रीरवीन्द्रनाथमल्लिकआर ै उनकेभाई श्रीजे०एन०मल्लिकहं ै।वेलोगकोलकाताकेचित्तरंजनऐवेन्यूइलाकेमेंरहतेहं ै।यह सबखबरमिलतेही श्रीनरेन्द्रनाथमुखर्जीएवंप्रो०गुरूचरणसामंतजामताड़ामें बिहार-बंगालीसमितिकीएकशाखास्थापितकरतेहं ै;उनकातत्कालीनलक्ष्यथा नन्दनकाननकोसमितिकेमाध्यमसेखरीदनाएवंतेजीसेमिटरहेविद्यासागरमहाशय केजीवनकेअंतिमस्मृतियोंकीरक्षाकरना।यहअत्यन्तआनन्दआर ै गारै वकाक्षणथा किबिहार-बंगालीसमितिनेजल्दसेजल्दइसकार्यकोप्रारम्भकरनेमेंदिलचस्पी दिखाईऔरै समितिनेइसकेलिएआर्थिकसक्षमताप्रदानकिया।1973सालमें नन्दनकाननमेंविद्यासागरमहाशयकेअंतिमस्मृतिरक्षाकायहमहानकार्यप्रारम्भिक रूपसेशुरूहुआ।

विद्यासागर स्मृति रक्षा समिति

इससमयबिहारआर ै पश्चिमबंगालकेप्रभावशालीराजनीतिज्ञव्यक्तित्व,प्रख्यात शिक्षाविद्जाने-मानेचिकित्सकएवंकानूनविद्एवंसमाजकेविभिन्नस्तकेगुणवान व्यक्तित्वकोलेकरगठितहुआयहसंस्था।इसकाप्रारम्भिकउद्देश्यथानन्दनकानन को प्राथमिकतथ्योंकीखोजसेयहजानाजल्दसेजल्दखरीदनेकेलिएआर्थिकस्रोत विकसितकरनाएवंविद्यासागरमहाशयकीस्मृतियोंकीरक्षाकीमुकम्मलव्यवस्था करना।16नवम्बर,1973सालमेंविद्यासागरस्मृतिरक्षार्थ1/-रूपयाकाकूपन बेचकरअर्थसंग्रहकरनेकाकार्यप्रारम्भहुआ।सम्पूर्णबिहारमेंइसकूपनकीविक्री हुईउससमयतत्कालीनबिहारकेमुख्यमंत्रीअब्दुलगफूरसाहबने15,000/-रूपये दियेथे।29मार्च1974सालमेंबिहारबंगालीसमितिनेनन्दनकानन की03एक ड़की जमीनकेसाथकोलकाताकेश्रीवीरेन्द्रनाथमल्लिक,श्रीरवीन्द्रनाथमल्लिकएवंश्री जितेन्द्रनाथमल्लिकसे24,000/-में वापसखरीदलिये।1975सालमेंबिहार

बंगालीसमितिनेस्मृतिरक्षार्थं विद्यासागरस्मृतिरक्षासमिति " नन्दनकाननस्मारक समिति ', करमाटाँड़ का गठन किया गया एवं समिति के सत्प्रयास से विद्यासागर बालिकाविद्यालयकीस्थापनाकीगयी ।1978सालमेंबिहारबंगालीसमितिके सत्प्रयासोंसेकरमाटाँड़स्टेशनकानामपरिवर्तितकरके' विद्यासागर 'रखागया। 1993सालमेंपटना(बिहार)केप्राख्यातकानूनविद्एवंबिहारबंगालीसमितिके एकमहत्वपूर्णसदस्यश्रीश्यामाप्रसादमुखर्जीकीआर्थिकसहायतासेनन्दनकाननमें विद्यासागरभवनकेठीकपासविद्यासागरमहाशयकीप्रतिमास्थापितकीगयी ।1994 सालमेंकोलकाताके' विश्वकोषपरिषद् 'व 'पाथेरपांचाली 'संस्थाकीआर्थिक सहायतासेनन्दनकाननमें भगवतीभवन 'कानिर्माणहुआआर ै यहसबसम्भवहुआ तत्कालीनविधायकमाननीयश्रीशशांकशेखरभोक्ताजीकेदियेगयेविधायकनिधि सेऔरै कोलकाताकेविश्वकोषपरिषद्केसत्प्रयासोंसेआर्थिकसहायताप्राप्तहोने सेविद्यासागरभवनबना ।कोलकाताकेहीफ्रेण्ड्सऑफस्टेडियमकेतरफसेश्री सुभाषचक्रवर्तीसमितिको01लाखरूपयेदानस्वरूपप्रदानकरतेहं ै ।2000सालमें बिहारसेअलगहोकरझारखण्डराज्यगठितहोनेकेबादबिहारएवंझारखण्डके बांग्लाभाषियोंकोशामिलकरविद्यासागरस्मृतिरक्षासमितिकागठनइसकार्यको सुचारूरूपसेआगेबढ़ानेकेलिएअधिकृतकियागयातथा2008मेंनन्दनकाननमें विद्यासागरहोमियोपैथिकदातव्यचिकित्सालयहेतुभवनकानिर्माणकियागया। 26-27फरवरी2011कोविद्यासागरजीकोश्रद्धांजलिदेनेसमितिकेसत्प्रयासोंसे एकविराटसम्मेलनकाआयोजनहुआथा।' गुरूदक्षिणा 'नामसेयहकार्यक्रममें झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा के असंख्य विद्यासागर अनुरागी इस महासम्मेलनमेंशिरकतकरनेपहुँचेथेआर ै ' गुरूदक्षिणा 'देनेकावायदाभीकियाथा। उनकेआर्थिकप्रयासोंसेनन्दनकाननकेचारोंतरफसा ै फुटकीदीवारकाअधिकांश हिस्साबनचुकाह। ै अंतमेंयहकहाजासकताह ै किकरमाटाँड़मेंविद्यासागरजीकी स्मृतिरक्षासमितिनेप्रशंसनीयएवंसराहनीयकार्यकरनेकेबावजूदभीअभीकाफी कुछकरनाबाकीह। ै विद्यासागरनिवासकीआधारशिलाकरउसेसुन्दरबनाना, नन्दनकाननकेदीवारोंकाजोकार्यशेषबचाह ै उन्हेंयथाशीघ्रपूराकरना,दातव्य चिकित्सालयमेंरोगियोंकीचिकित्साकासमयबढ़ाना,विद्यालयपरिसरकोबढ़ाकर छात्र-छात्राओंकीसंख्यामेंवृद्धिकरना-इनसबकार्योंकोकरनेकेलिएअर्थबलएवं लोकबलकेसाथ-साथसत्प्रयासोंएवंचेष्टाकीव्यापकजरूरतह। ै बिहार-झारखण्ड बंगालीसमितिनेविद्यासागरस्मृतिरक्षासमितिकागठनकर27फरवरी2011

मेंइसकार्यकोआगेबढ़ानेकाबीड़ाउठाया।नन्दनकाननमेंमेंएकसभाकरके विद्यासागरस्मृतिरक्षाकायहमहानकार्यप्रारम्भहुआ।इसमेंसबकोयहबतायागयाह औरनिवेदनकियागयाह " कि10,000/-रूपयेकीअनुदानराशिदेकरविद्यासागर स्मृतिरक्षासमितिके20,00,000/-(बीसलाखरूपये)कीअमानतीकोषबनानेमें प्रारम्भिकरूपमेंमददकरें।मेरायहपरमसाभ " ाग्यरहाह " कि2015-16मेंदुबारा करमाटाँड़मेंबिहार-बंगालीसमितिद्वाराआयोजितसभामेंभागलेनेका;वहाँजाकर मनभावुकहोजाताह, " वहाँजाकरविद्यासागरमहाशयकेजीवंतरूपमेंअनुभवकरने कासौभ ाग्यमिलताह " वहाँकामनोरमपरिवेश,स्वच्छहवायें,स्वच्छआकाशसबने मेराहृदयभरदिया।वहाँविद्यासागरमहाशयकेहाथोंसेलगेआमकेपेड़काआम खाकरसिहरन-सामहसूसहुआ।करमाटाँड़गाँवमेंपूरापद " लचलकरलोगोंकेसाथ घूम-घूमकर,गानागाकर,उनकीतस्वीरहाथोंमेंलेकर,प्रभात-फेरीकरनामं "पूरीउम्र कभीनहींभूलपाऊँगी।उनकेसभीअनुरागियोंसेविनम्रअपीलह " किवेएकबार करमाटाँड़आयेंआरै नन्दनकाननकोदेखें।इसनन्दनकाननकेसमग्रविकासकेलिए अर्थबलआरै लोकबलदोनोंहीचाहिए।नयीपीढ़ीसेमेरीयहआशाह " किवेएकबार यहाँअवश्यआयेंआर" पण्डितईश्वरचन्द्रविद्यासागरमहाशयकेजीवनकीअंतिम स्मृतियोंकोदेखेंआर" उन्हेंसहेजनेमेंमददकरें।

शैशव एवं शिक्षा

अत्यन्तदरिद्रपरिवारमेंविद्यासागरमहाशयकाजन्महुआथा।उसयुगमें अंग्रेजीभाषाएवंसाहित्यपढ़नेकाअवसरबहुतसीमितलोगोंकोमिलपाताथा;पर उन्होंनेअपनीचेष्टासेअंग्रेजीएवंसंस्कृतभाषाकाअसाधारणज्ञानअर्जनकियाथा। उनकामाननाथाकिदेशकीशिक्षानीतिअंग्रेजी,संस्कृतएवंअन्यप्रान्तीयतीनों भाषाओंमेंहोनीचाहिए।उन्होंनेस्वयंएककट्टरब्राह्मणपरिवारमेंजन्मलेनेके बावजूदसमाजकीकुप्रथाएवंकुसंस्कारकेविरूद्धसाहसिकअभियानचलाया। कठोरता,कोमलता,बुद्धिमताएवंसाहसिकताकाअपूर्वसंगमथाउनकाचरित्रएवं उनकेद्वाराकियेगयेकार्य।

विद्यासागरमहाशयपूरानाम'ईश्वरचन्द्रबन्धोपाध्याय'था।उनकाजन्म पश्चिमबंगालराज्यकेमेदिनीपुरजिलेके' बीरसिंह'गाँवमें26सितम्बर1820को हुआथा;इनकेपिताकानामठाकुरदासबन्धोपाध्यायएवंमाताकानामभगवतीदेवी था।वेसातभाईएवंतीनबहनथे।विद्यासागरमहाशयज्येष्ठपुत्रथे।बीरसिंहगाँवके

करीबहीक्षीरपाईगाँवनिवासीशत्रुघ्नभट्टाचार्यमहोदयकी8सालकीकन्यादीनमयी देवीकेसाथ14सालकेविद्यासागरजीविवाह्हुआथा ।बादमेंउनकेएकमात्रपुत्र21 सालके' नारायण 'काविवाहखानाकुल–कृष्णनगरनिवासीशम्भूचन्द्रमुखोपाध्याय की16सालकीविधवाकन्याभवसुन्दरीकेसाथहुआ ।जीवनकेशेषकालमेंनाना

होम्योपैथिक चिकित्सालय, जहाँ 'विद्यासागर' महाशय रोगियों की चिकित्सा करते थे

प्रकाकरेरोग–यंत्रणाकोसहनकरनेकेबादकोलकातामें29जुलाई1891कोउन्होंने अपनेनश्वरशरीरकात्यागकरदिया ।

शैशवकालसेहीविद्यासागरमहाशयअत्यन्तमेधावीथे ।ग्रामीणविद्यालय मेंअपनीशिक्षापूर्णकरनेकेबाद1829मेंकोलकाताकेगर्वमेन्टसंस्कृतकॉलेजमें उन्होंनेदाखिलालिया ।

शिक्षाविद् एवं शिक्षा प्रशासक

1841मेंफोर्टविलियमकॉलेजमेंप्रधानपण्डितपदपरउनकीनियुक्तिहुई । 1845मेंसंस्कृतकॉलेजकेसहायकसचिव (Assistant Secretary)केपदपर नियुक्तहुए ।1849मेंफोर्टविलियमकालेजकेहेडराइटरएवंकोषाध्यक्षबनायेगये । 1850मेंसंस्कृतकॉलेजकेसाहित्यअध्यापकवबिटननारीविद्यालयकेसम्पादक बनायेगये ।1851मेंसंस्कृतकॉलेजकेसचिवएवंबादमेंप्राचार्यनियुक्तहुए ।1853 में बीरसिंह 'ग्राममेंएकविद्यालयकीस्थापनाकी ।1854मेंबोर्डएवंएक्जामिनर्सके सदस्यबनायेगये ।1855मेंदक्षिणबांग्लास्कूलकेइंस्पेक्टरनियुक्तहुएवसामान्य

स्कूलकीस्थापनाकी।उन्होंनेनदियाजिलामेंपाँचमॉडलस्कूल,वर्धमानजिलामें पाँचमॉडलस्कूल,हुगलीजिलामेंपाँचएवंमेदिनीपुरमेंचारमॉडलस्कूलस्थापित किया।1858मेंहुगलीजिलामेंहीआर ै तेरह,वर्धमानजिलामेंदस,मेदिनीपुरजिला मेंतीनआरै नदियाजिलामेंएक बालिका विद्यालय की स्थापना की। 1859 में मुर्शिदाबादकेबाँदीमेंअंग्रेजी-बांग्लामाध्यमकेस्कूलकीस्थापनाकी।1861में

'नन्दनकानन' करमाटाँड़ स्थित वह चबूतरा, जहाँ 'विद्यासागर' महाशय बच्चों को शिक्षादान दिया करते थे

कोलकाता ट्रेनिंग स्कूल में के सेक्रेटरी एवं हिन्दू पेट्रियेट के संचालकनियुक्तहुए।1863में वर्ड्सइन्सिटिट्यूटकेसंचालक नियुक्त हुए। 1864 में कोलकाताट्रेनिंगस्कूलकानाम बदल कर मेट्रोपोलिटन इन्सिटीट्यूशन रखा गया। 1866 में बहु-विवाह के खिलाफ अखिल भारतीय व्यस्थापकसभामेंआवेदनपत्र दिया। 1873 में उन्होंने मेट्रोपोलिटन कॉलेज की स्थापनाकी।1880मेंसी.आई. ई.की उपाधि से अलंकृत हुए एवं पंजाब विश्वविद्यालय के फेलोनिर्वाचितहुए।1883आर ै 1885मेंमेट्रोपोलिटनविद्यालयकीकईशाखाओंकी स्थापना की। 1890 में 'बीरसिंह' ग्राम में भगवती विद्यालय की स्थापना की। विद्यासागरमहाशयकीशिक्षानीतिकीयहपहलीपरिकल्पनाथीकिसंस्कृतएवं अंग्रेजीभाषाकेमाध्यमसेएकसाथछात्रोंकेज्ञानकोसमृद्धकरना।6अप्रल ै 1846 कोउन्होंनेसंस्कृतकॉलेजमेंदाखिलालियाथा,आर ै इसीकॉलेजमेंउन्होंनेशिक्षानीति सम्बन्धीभावनाओंकोमूर्तरूपदेनेकीपरिकल्पनाकीथी।उनकीयेपरिकल्पनाएँ शिक्षाजगतकेलिएएकबहुमूल्यवरदानसाबितहुई।छात्रोंकेलिएभारतीयभाषाओं केसाथ-साथविदेशी,विज्ञानएवंसभ्यतासेभीअपनेआपकोअवगतकरापाना सम्भवहुआ।इसकेअलावाआधुनिकयुगकेविज्ञानवसभ्यतामेंभारतीयसामाजिक

मूल्यों को आलोकित करना भी उनकी एक परिकल्पना थी। इसी परिकल्पना में मोयेट, मार्शल, हॉलडजैसे अंग्रेजशिक्षकवृन्दएवंसंस्कृतकॉलेजकेअनेकपण्डितों काउन्हेंसमर्थनमिला।इसकार्यमेंअनेकबाधाएँभीउत्पन्नहुईंपरउनसबसेपारपाने मेंवेसफलहुए।

करमाटाँड़ स्थित नन्दन कानन में 'विद्यासागर' महाशय का निवास

शिक्षाविस्तारकेलिएवेकिसीपरभीआश्रितनहींरहनाचाहतेथे।अत: उन्होंनेज्ञान–विज्ञानकीपुस्तकोंकीरचनाएवंउन्हेंप्रकाशितकरनेकेलिएपुस्तक भण्डारएवंमुद्रणयंत्रकीस्थापनाकी।विद्यासागरमहाशयअपनीदूर–दृष्टि,तीव्र बुद्धिएवंस्वतंत्रविचारधारासेसम्पूर्णमानवसमाजकोशिक्षितकरनाचाहतेथे। उनकायहमाननाथाकियथार्थविरोधीदर्शनकभीभीसार्थकनहींहोसकता।पर हिन्दूदर्शनकोपूरीतरहवर्जितभीनहींकियाजासकताथा।अत:उन्होंनेहिन्दूदर्शन विभागऔर अंग्रेजीविभागकीभीस्थापनाअपनेसंस्कृतकॉलेजमेंकिया।इसके फलस्वरूपछात्रवृन्दअपनेदर्शनविचारऔर वास्तविकशिक्षाएकसाथग्रहणकरनेमें सक्षमहुए।संस्कृतकॉलेजमेंइसीतरह1861से1863तकइसकापूर्णगठितस्वरूप सामनेआया।

उनकी रचनाएँ

विद्यासागरमहाशयद्वारारचितबांग्लापुस्तक1847मेंबेतालपंचविंशती (फोर्टविलियमकॉलेजसेप्रकाशितहिन्दीपुस्तकबेतालपचीसीग्रन्थकाअनुवाद था।)1848मेंहीबांग्लाइतिहास–द्वितीयभाग(मार्समन रचितअंग्रेजीग्रन्थकेआधार पर)1849में'जीवनचरित'(चेम्बर्ससेसाभारअंग्रेजीपुस्तककेअनुसार)1851

को' बोधोदय 'संस्कृतव्याकरणकीउपक्रमिकाप्रकाशितकी ।1852में' ऋजुपाठ' प्रथमभागकीरचनाकी ।1853मेंव्याकरणकाम ै ुदीप्रथम,द्वितीय,तृतीयभागकी रचनाकी ।1854मेंव्याकरणचतुर्थभागएवं' शंकुतला '(महाकविकालीदासद्वारा रचित:अभिज्ञानशांकुन्तलम्नाटकपरआधारित)1855मेंविधवाविवाहप्रचलित होनाउचितह ै यानहींइसपरलिखा ।इसीसमयबांग्लाकीवर्णमालाकीपुस्तक ' वर्णपरिचय 'प्रथमभागएवंद्वितीयभागकीरचनाकी ।1856विधवाविवाहपर पुस्तक Marriage of Hindus widowनामकपुस्तकप्रकाशितहुई ।इसीसाल ' कथामाला '' चरितावली 'भीलिखी ।1860मेंमहाभारत(उपर्कमोनिकाभाग)एवं

करमाटाँड़ स्थित 'विद्यासागर दातव्य होम्योपैथिक चिकित्सालय'

' सीता का वनवास ' लिखी । 1863 में उन्होंने ' आख्यान मंजरी ' , 1864 में ' शब्द मंजरी ' ,1869में' भ्रांतिविलास 'नामकपुस्तकोंकीरचनाकी ।1871मेंबहुविवाह रहित समाज में अपनी क्रांतिकारी विचार एवं इसके विरूद्ध शास्त्रीय प्रमाणों की व्याख्याकी ।1873मेंबहुविवाहरहितसमाजवबहुविवाहसमर्थनकारियोंकेमत समर्थनपरएकपुस्तकलिखी ।इसीसालउन्होंनेएकपुस्तक' बामनाखन ै म 'लिखा। 1888 में ' निष्कृतिलाभप्रयास '। 1889 में संस्कृत की रचना की। 1890 में ' श्लोकमंजरी 'कीरचनाकी ।1891मेंउन्होंने' विद्यासागरचरित 'कोलिखा(यह उनके मरणोपरांत प्रकाशित हुआ) 1892 में ' भूगोलखगोलवर्णम् 'प्रकाशित हुआ। इनकेअलावाभीइनकीकुछआर ै पुस्तकेंभीप्रकाशितहुईं ।1853-1858' सर्वदर्शन संग्रह' (यह पुस्तक ऐसियाटिक सॉसायटी के द्वारा प्रकाशित हुई) 1853-1890 अनुवादएवंसम्पादन-' रघुवंशम् '' किरातार्जुनीयम् '' शिशुपालवध '' कुमारसम्भव ',

'कादम्बरी', 'वाल्मीकि रामायणम्', 'मेघदूतम', 'उत्तरचरितम्', 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'', हर्षचरितम्'', अन्नदामंगल 'प्रथमवद्वितीयभाग', पदसंग्रह' प्रथमवद्वितीयभागइसकेअलावाशब्दसंग्रहजोइनकीमृत्युकेपश्चात्प्रकाशित हुआ।

समाज सुधार के कार्य

'विद्यासागर' महाशय का शयनकक्ष

भारतवर्षकीशिक्षाव्यवस्थाएवं सामाजिकजीवनमेंविद्यासागरमहाशयका अवदानकभीभुलायानहींजासकेगा।एक साथइतनेगुणोंकासमावेशकिसीव्यक्तिमें दुर्लभहै। उनकाकर्मजीवन1846से1875 सालतकविस्तृतरूपमेंरहा।शिक्षाक्षेत्रके अलावा वे प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक जन-जीवन में संस्कार की ओर भी हमेशा अग्रसररहे।इसीसालउन्होंनेविधवाविवाह कानूनकेलिएतत्कालीनसरकारकोअपने मंतव्यकेसाथआवेदनपत्रसमर्पितकिया। 1856 में उनके द्वारा दिये गये आवेदन को सरकार ने स्वीकार कर लिया। 1857 को हुगली जिला में सात एवं वर्धमान जिला में एकबालिकाविद्यालयकीस्थापनाकी।1855से1856तकवेविधवाविवाहप्रचार एवंआन्दोलनकोआगेबढ़ानेमेंलगेरहे।उन्होंनेअपनेएकमात्रपुत्रकाविवाहएक 'विधवाकन्या'सेकराया।बहुविवाहकेविरूद्धकानूनकाप्रस्तावभीउन्होंनेइसी समयरखाएवंइसकेलिएआन्दोलनशुरूकिया।उनकासम्पूर्णकर्मजीवनतीनक्षेत्रों मेंअग्रसररहा-(1)शिक्षाकाक्षेत्र(2)सामाजिकक्षेत्रएवं(3)साहित्यिकक्षेत्र। लेकिनमात्रकर्मजीवनसेहीउनकेसम्पूर्णजीवनकापरिचयनहींमिलताह ै अपितु उनकेचारित्रिकधर्म,शक्तिएवंमानवधर्ममेंउनकीरूचिसेउनकेसम्पूर्णव्यक्तित्वका पताचलताह ै जिससमयभारतवर्षअंग्रेजोंकेअधीनथाउससमयहिन्दुओंएवं भारतवासियोंकोअपनीमर्यादातकछोड़नेकोकहाजारहाथा। उससमयफोर्ट विलियमकॉलेजमेंविद्यासागरमहाशयबांग्लाभाषापढ़ातेथे।अंग्रेजसिविलियन छात्रोंकोइसीकॉलेजमें1880मेंविलियमकर ै ीकीअध्यक्षतामेंउनअंग्रेजछात्रोंके

लिए बांग्ला ग्रंन्थों की रचना का सूत्रपात हुआ। यह एक अविश्वसनीय एवं अविस्मरणीयघटनाथी;जिसपरहमआजभीस्वयंकोगार ै वान्वितमहसूसकरतेहं ै। उनकेकर्त्तव्यनिष्ठाएवंचारित्रिकगुणोंसे अंग्रेजसिविलियनभीउनकेप्रतिश्रद्धान्वित

'विद्यासागर' महाशय द्वारा अपने हाथों से लगाया गया आम का पेड़, आज भी उनकी उपस्थिति को दर्शाता है

एवंबन्धुत्वकाभावरखतेथेजस ै फ्रेड्रिक,हॅ ै लडे,सिटन,कार,सिसिल,बिडनआदि विद्वान।

विद्यासागरमहाशयनेयहअनुभवकियाथाकिपठन–पाठनकेसाथही पाठ्य–पुस्तकोंकीरचनाभीशिक्षाव्यवस्थाकाएकप्रधानअंगह। ै इसलिएउन्होंने शिक्षा,दर्शन,शिक्षा–नीतिएवंशिक्षाविस्तारकेलिएकाफीसारेपाठ्य–पुस्तकोंकी रचनाकीएवंउनकाप्रकाशनभीकरवाया।शिक्षाजगतमेंजोपरिवर्तनउन्होंनेकिया उसमेंउन्हेंकोईबाधा–विपत्तिनहींआई,ऐसानहींथा,परन्तुउनकीशिक्षादृष्टिएवं चरित्रशक्तिकेसामनेयहसबबाधाएँविफलहोगयी।शिक्षाजगतमेंउनकेपरिश्रम, कार्यकुशलता, शासनशृंखला के अद्भुत शक्ति के सामने शिक्षा मण्डल को हार स्वीकारकरनीपड़ी।विद्यासागरमहाशयकोअपनीशिक्षाप्रणालीस्वाधीनतामिली जिसकेफलस्वरूपकॉलेजमेंसर्वत्रसफलतादिखी।संस्कृतकॉलेजकेसाथ–साथ उन्होंनेअपनेशिक्षणक्षेत्रकोभीआगेबढ़ाया।

विद्यासागर एवं नारी शिक्षा

नारीसमाजकेप्रतिबाल्यकालसेहीउनकेमनमेंअनकेप्रश्नउमड़रहेथे।

नारीसमाजशिक्षितक्योंनहीं ?नारीउच्चशिक्षाप्राप्तक्योंनकरे ?बालविवाह, विधवाविवाहएवंबहुविवाहसेनारीसमाजकस ै ेअपमानितआरै उपेक्षितमहसूस करताहै जैसेअनेकोंसवालउन्हेंचिंतितआर ै विचलितकरतेथे।

‘विद्यासागर’ महाशय की माता ‘भगवती देवी’ के नाम पर भवन

उनकेइसीनारीसमाजकेप्रतिसम्मानएवंसंवेदनशीलताकोदेखतेहुएनारी विद्यालय के बेथुन साहब ने उन्हें वहाँ का सम्पादक बनाया, बेथुन स्कूल का लालन–पालनकरअपनेउत्साह,परिश्रमएवंकार्यकुशलतासेउन्होंनेउसेबड़ेरूपमें परिवर्तितकिया।उससमयविद्यासागरमहाशयकेदोप्रधानकार्यथे,बेथुनस्कूलके सम्पादककेरूपमेंकार्यकरना,छात्राओंकोएकत्रितकरनावमेट्रोपॉलिटनस्कूल औरकॉलेजकोअपनेपरिश्रमसेसींचना।नारीउन्नतिविद्यासागरमहाशयकेजीवन का प्रधान ध्यान व चेष्टा का केन्द्रबिन्दु बना। जीवन के शेषकाल में भी उन्होंने ‘बीरसिंह’ग्रामकीनारियोंकेलिए‘भगवतीविद्यालय’कीस्थापनाकी।‘करमाटाँड़’ मेंभीपाठशालाशुरूकी।अपनेजीवनकेसभीकर्मकाण्डमेंउन्होंनेविधवाविवाहको उन्होंनेसर्वोपरिरखा।उन्होंनेअपनेसहोदरशम्भूचन्द्रविद्यारत्नकोएकपत्रमेंलिखा था,विधवाविवाहमेरेजीवनकासर्वप्रधानसत्कर्मह। ै इसजन्ममेंइसकेअलावा किसीआरै कार्यकोसर्वोपरिरखनेकीसम्भावनानहींह। ै उनकेमनमतिष्कमेंनारियों के प्रति कितना श्रद्धा आर ै सम्मान था वह इन दो पँक्तियों में भी स्पष्ट होता ह ै।

वेसंस्कृतकॉलेजकोशिक्षाकामूलकेन्द्रबनानाचाहतेथे,उनकीपारखी शिक्षादृष्टिकाप्रथमपरिचयमिलताह ै उनकीलिखी 'Notes on the Sanskrit

college' मेंयहलिखागयाथा12अप्रल ै 1852सालमें ।उन्होंनेइसमेंयहबतायाथा किशिक्षणकेविषयकहाँसेमिलेंगे ?यहकिसभाषामेंउपलब्धह ? ै और वहभाषा

करमाटाँड़ स्थित नन्दन कानन में 'विद्यासागर' महाशय का निवास, जिसका जीर्णोद्धार झारखण्ड सरकार द्वारा किया गया

कहाँसेसीखें ?इत्यादि ।उनकेप्रत्येककार्यकीसफलतानिर्देशनशक्तिमात्रसंस्कृत कॉलेजकोहीनहीं,बल्किमेट्रोपॉलिटनस्कूलकोभीसमानरूपसेउन्नतकिया। स्कूलकोउन्होंनेअपनेअदम्यकार्यशक्तिसेकॉलेजमेंपरिवर्तितकिया ।कोलकातामें तबसरकारीकॉलेजकेसाथ-साथमिशनरीजकॉलेजभीअंग्रेजसाहबोंकेलिएथा। कोलकताविश्वविद्यालयकेमिशनरीएवंसरकारीसदस्योंनेइसकाविरोधकिया;पर उनकाविरोधबेअसररहाआर ै शासकोंनेविद्यासागरमहाशयकीइच्छाओंकासम्मान करतेहुएउनकेप्रस्तावोंकाअनुमोदनकिया ।मेट्रोपॉलिटनहीबंगालीद्वाराप्रथमगर ै सरकारीकॉलेजबना ।आजमेट्रोपॉलिटनकॉलेजविद्यासागरकॉलेजकेनामसेजाना जाताहै। आजकेवर्तमानयुगमेंउनकीकार्यकुशलताभारतवासियोंकेलिएएक मिसालहै जोउनकेजसै ेमहानसमाजसुधारक,शिक्षासंस्कारक,दयावानव्यक्तित्व हमसबकेआजभीपथप्रदर्शकहं ै।

चरित्र शक्ति व मानव प्रेम

विद्यासागरमहाशयकाकर्मजीवनहीउनकासमग्रजीवनपरिचयनहींथा; उनकेकर्मजीवनसेहीअधिकमहत्वपूर्णथाउनकाचरित्रशक्तिवमानवप्रेम ।आज उनकेजन्मकेदोसा ै सालकेबादभीजबहमउनकेसम्पूर्णकर्मजीवनकाअवलोकन

चित्र : देवाशिष मिश्र

बादुड़बागान, कोलकाता स्थित विद्यासागर जी के मकान का वह कक्ष जहाँ रामकृष्ण परमहंस देव जी विद्यासागर जी से मिले थे

करते हैं तो पाते हं ै कि वे वास्तवमेंमहानशिक्षागुरू थे।उन्होंनेआधुनिकशिक्षा जगतकोशिक्षाकाआदर्श रूपप्रदानकियाथा।उनके शिक्षाकाप्रधानस्वरूपथा विदेशीविज्ञानआरै सभ्यता का संगम एवं उसे हमारे जीवन में समाहित किया। विदेशीसभ्यताकाअर्थथा नईजीवनदृष्टि,नयेजीवन का बोध। संसार की आधुनितमसभ्यताइंग्लण्ै ड, फ्रांस, यूरोप का एकान्त सम्पदातोनहींहोसकता। रिनाईसेंस, रिफमेंशन एवं पलासी विद्रोह आधुनिक सभ्यता, विज्ञान व शिल्प इसीविद्रोहसेसमृद्धहोकरप्रथमइंग्लण ै डफिरयूरोपफिरअमेरिकाफिरआयाएशिया औरअफ्रीकाकीसभ्यतामें।विद्यासागरमहाशयभीइसीआधुनिकताकोहमारेदेश मेंआत्मसातकरनाचाहतेथे;यहीकारणथाकिउन्होंनेपुरानेहिन्दूदर्शनकीकठोर समालोचनाकीचप्पलपहने,चादरओढ़ेविद्यासागरमहाशययहसमझागयेहं ै कि पाश्चात्यसभ्यताकाअर्थहट ै ,कोर्टआरै सिर्फअंग्रेजीबोलनानहींहं ै।वेचाहतेथे भारतीयभाषाओंकीसामाजिकउन्नति।जोकिआधुनिकज्ञान-विज्ञानकामाध्यमबन सकेआरै यहसबअंग्रेजीभाषाएवंसाहित्यकोआत्मसातकरनेसेहीहोसकताथा। लेकिनअंग्रेजीभाषाअगरशिक्षाकाएकमात्रमाध्यमहोतातोयहकुछलोगोंकेलिए हीसुलभरहता;साधारणलोगोंतकइसकीपहुँचनहींहोपाती।समस्तलोगोंकीउन्नति केलिएजिसशिक्षाकामहत्वह ै ठीकउसीप्रकारसमस्तआमजनोंतकउसका प्रचार-प्रसारभीआवश्यकह।ै यहीकारणह ै किविद्यासागरमहाशयनेशहरोंआर ै गाँवोंमेंइतनेविद्यालयोंकीस्थापनाकीताकिआमजनोंकोउनकीशिक्षा,उनकीभाषा

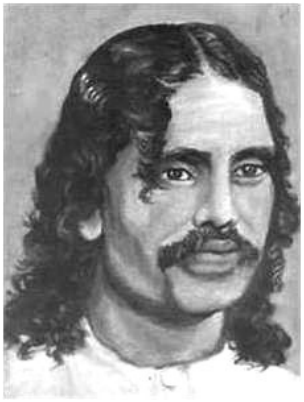

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

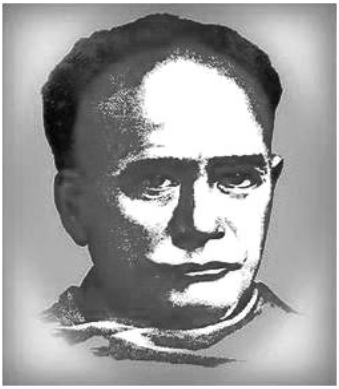

पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

केमाध्यमसेहो सके। उनकी शिक्षा साहित्य को हम जितना देखतेहैं उतनाही हम अनुभव भी करते हैं। पाठ्य-पुस्तकों की परिकल्पना में उनका वास्तविकजीवनबोधउनकीनिपुणककार्यकुशलताएवंभाषाकीसरलताझलकती है।'वर्णपरिचय'केवर्णज्ञानसेअशिक्षितयानिरक्षरोंकोउन्होंनेहाथपकड़कर सम्भालाहै। वर्णपरिचयकेबादभीएककेबादएकवास्तविकज्ञानकीसीढ़ीपारकर वेशिशुशिक्षार्थियोंकोउनकेज्ञानकापरिमार्जनकरनेहेतुसर्वदासचेष्टरहतेथे। कहानियोंकेमाध्यमसेमानवीयगुणोंकेसाथउन्होंनेशिक्षाकापरिचयआमजनोंसे करवाया। श्रेष्ठमहापुरूषोंकी जीवनी सुनाकर उन्हें प्रोत्साहित किया। आधुनिक जीवन,पृथ्वीकाज्ञान,वज्ञ ानिकोंकाजीवनसंघर्ष,महानव्यक्तियोंकेगुणगानके साथ-साथपारिवारिकएवंसामाजिककल्याणकारीनीतियोंकाबोधकरवानायहसब उनकीशिक्षानीतिकाप्रमुखअंगथा।विद्यासागरमहाशयकेचरित्रकीयहएकमहान विशेषताथीकिवेबहुतजिद्दीथेजोकामवेठानलेतेथेउसेवेपूराकरकेहीमानतेथे। इसीजिदकेकारणउन्होंनेबहुतसेअसम्भवकार्योंकोभीसंभवकरदिखायाथा। अनेकबाधाविपत्तियोंकोपारकरकेभीवेअपनेलक्ष्योंकोप्राप्तकरतेथे।यहसबहमें विद्यासागरमहाशयकेभाईशम्भूचन्द्रविद्यारत्नकीलिखीपुस्तकोंसेपताचलताह। विद्यासागर महाशय ने 'जीवन चरित्र' एवं 'भ्रमनिवास' नामक पुस्तक लिखी। बाल्यकालसेलेकरअपने जीवनकेअन्तिमकालतकउन्होंनेअपनीप्रतिज्ञायाद रखी।सारीरातजागकरभीवेअध्ययनकियाकरतेथे।

उनकेचरित्रकीएकआर उल्लेखनीयबातयहह किवेबहुतहीसीधे-सरल इंसान थे। आजीवन उन्होंने मोटे कपड़ों का ही परिधान पहना; उन्होंने कभी भी आधुनिककपड़ेनहींपहने।वेअपनीमाँकेहाथोंचरखेसेबुनेधागोंसेबनेकपड़ोंको पहनकरहीकॉलेजजायाकरतेथे।कॉलेजद्वाराप्राप्तछात्रवृत्तिवेअपनेपिताकोभेज

दियाकरतेथे।इसपस ै सेउनकेपितानेगाँवमेंजमीनखरीदकरघरबनवाया।उनके पितानेउन्हेंकहा–किवेदेशवासियोंकेपढ़ाईकेबारेमेंभीसोचेंआर ै उसदिशामें कार्यकरें।बहुतसारेधनीलोगअपनीबेटियोंकोविवाहविद्यासागरजीसेकरवाना चाहतेथे;परवेनहींमाने,क्षीरपाईगाँवकेशत्रुघ्नभट्टाचार्यमहोदयबहुतगणमान्य व्यक्तिथेउन्होंनेअपनीपुत्रीं दिनमयी 'केलिएविद्यासागरमहाशयकेपितासेउनका रिश्तामाँगा।विद्यासागरमहाशयजीआजीवनविवाहनहींकरनाचाहतेथेपरन्तुपिता कीइच्छाकोसम्मानदेतेहुएउन्होंनेविवाहकेलिएअपनीरजामन्दीदेदी।उनकी

संस्कृत विद्यालय, कलकत्ता (अब कोलकाता)

इच्छा थी कि उनका सारा जीवन शिक्षा, देश के उन्नति के कार्यों में लगे। अपनी शैश्वावस्थासेउन्हेंकाल्पनिकदेवी–देवताओंपरविश्वासनहींथा।अपनेमाता–पिता कोहीवेदेवताओंकीतरहपूजाकरतेथे।उनकेचारित्रिकगुणोंमेंयहप्रधानगुणथा किवेबहुतहीदयालू,करूणामयीआर ै विनम्रथेआर ै यहीकारणह ै किउन्हेंबहुतसारे नामोंसेजानाजाताथा।उन्हेंलोगकरूणाकेसागरआर ै दयाकेसागरकेनामसेभी बुलातेथे।संक्रामकरोगियोंकीसेवाकरनेसेभीवेनहींघबड़ातेथे।संक्रामकरोगियों केमल–मूत्रभीवेअपनेहाथोंसेसाफकरतेथे।जोछात्रभूखेरहतेथेउन्हेंवेखानाभी देतेथे।जिनकेकपड़ेफटेहोतेथेउन्हेंवेकपड़ेभीदेतेथे।किसीभीजीवकेकष्टसे उन्हेंअपारकष्टहोताथा;यहीकारणथाकिलोगउन्हें दयामय 'केनामसेभीजानते थे।वेकिसीभीजातिआर ै धर्मकाभेदनहींमानतेथेजोभीमनुष्यपीड़ितआर ै रोगाक्रांतदिखतेथे,वेउनकीसेवामेंलगजातेथे।बहुतसारेअनाथलोगोंकेलिएवे

देवस्वरूपथे ।अपनेकरूणामयीव्यक्तित्वकेचलतेवेपीड़ितव्यक्तियोंकेबीचरहकर उन्हेंसुकुनपहुँचातेथेउनकेइसकरूणामयरूपकोदेखकरहीलोगकहतेथेकिये मनुष्यनहींदेवताहं " ।विद्यासागरमहाशयकेभ्राताशम्भूचन्द्रविद्यारत्नद्वारारचित

पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाशय के नाम पर 'विद्यासागर' स्टेशन

'विद्यासागरचरित'एवं' भ्रमनिवास 'नामकग्रंन्थमेंउनकेकोमलएवंसहृदयकेबहुत सारीघटनाओंकाउल्लेखह; " इन्हींमेंसेदोघटनाओंकाजिक्रकरनालाजिमीह। " एक बारउन्होंनेदूधआर" दूधसेबनीसभीचीजोंकापरित्यागकरदिया ।इसकाकारणयह थाकिबछड़ेकोदूधसेवंचितकरगायकेदूधकोनिकालकरउसकीविक्रीहोरहीह " यहघटनाउनसेसहननहींहुई,इसकारणउन्होंनेदूधआर " दूधसेबनीवस्तुओंका परित्यागकिया ।काफीदिनोंतकदूधसेबनेखाद्यपदार्थनहींखानेकेकारणशारीरिक रूपसेकमजोरहुएतोचिकित्सकीयपरामर्शकेबादउन्हेंदूधसेबनेखाद्यपदार्थलेने पड़ेतोउन्हेंयहसहजरूपसेस्वीकार्यनहींहुआआर " उसकासहीढंगसेपाचननहीं हुआ ।यहघटनाउनकेहृदयकीकोमलताकोदर्शाताह। "

एकबारवेसंस्कृतकॉलेजकेविशेषकार्यसेहिन्दूकॉलेजकेप्रिंसिपल 'कॉर'साहबकेपासगये ।' कॉर'साहबचमड़ेकेजूतेपहनकरटेबुलपरपाँवचढ़ाकर उनसेबातेंकरतेरहे,उनकेइसव्यवहारसेविद्यासागरमहाशयकोबहुतठेसपहुँची ।

कुछदिनोंकेबादहिन्दूकॉलेजकेकामसें कॉर'साहबकोसंस्कृतकॉलेज आनापड़ाउसदिनउन्होंनेअपनाप्रतिशोधलियाआर " चप्पलपहनेहुएपाँवटेबुलपर चढ़ाकरबातेंकरतेरहेआर " 'कॉर'साहबकोबठ " नेतककोनहींबोला ।' कॉर'साहब'

लज्जितऔर अपमानितहोकरलाट ै गये ।उन्होंनेसमाजशिक्षासेक्रेटरी' मॉयेट 'साहब सेइसकीशिकायतकी ।समाजशिक्षाविभागनेविद्यासागरमहाशयजीसेइसघटना परजवाबमाँगातोउन्होंनेअपनेजवाबमेंबतायाकिइसतरहकेघटनाओंकीशुरूआत किसनेकी;पूरीबातजानकरसचिवमहोदयबहुतनाराजहुएआर ै उन्होंनेकहाकि विद्यासागरमहाशयजसै ातेजस्वीपुरूषउन्होंनेनहींदेखा।' मॉयेट 'साहबविद्यासागर

'विद्यासागर' स्टेशन के प्लेट फार्म नं० 2 पर स्टेशन प्रबन्धक के कार्यालय के समीप पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाशय का चित्र एवं उनसे जुड़ी दस बातें

जीकोबहुतमानतेथेआर ै उनकाबहुतसम्मानकरतेथे;आर ै जबतक' मॉयेट 'साहब सामाजिकशिक्षाविभागकेसचिवरहेउन्होंनेविद्यासागरमहाशयजीसेबिनापरामर्श लियेकोईकार्यनहींकिया।

विद्यासागरमहाशयकेचरित्रकावर्णनकुछशब्दोंमेंनहींकियाजासकता। गाँव-गाँवघूमकरजिसकाजोअभावयादु:खहोताथाउसकावेबेहदगोपनीयतरीके सेनिदानभीकरतेथे ।गोपनीयदानकेबारेमेंधनवानलोगसुनकरहर ै ानरहजातेथे;वे सोचतेथेकिहमसबजोदानकरतेहं ैवोतोसबकोदिखाकर,सबकोजताकरकरतेहं ै; लेकिनविद्यासागरमहाशयतोकिसीकोजाननेभीनहींदेतेहं ै ।एकबारऐसेहीकिसी नेउनसेपूछाउनकीइसगोपनीयताकेबारेमेंतोउन्होंनेकहाकियदिआपदानग्रहण करनेवालेकोदानकेबारेमेंबतायेंगेतोउन्हेंयहदानलेनेमेंलज्जाआयेगीइसलिए उन्हेंगोपनीयरखनेमेंहीभलाईह। ै जोलोगोंकोदिखाकरदानकरतेहं ैवेतोदिखावा करतेह ै ।विद्यासागरमहाशयमानवोंकादु:ख,कष्ट,अभावदेखकरमददकरतेथे, दिखावाकरकेनहीं।एकबारउनकेघरमेंडकत ै ीहोगयी,पुलिसआईपरकुछकर

नहीं पायी। दारोगा को विद्यासागर महाशय ने एक पस ै ा भी नहीं दिया। उनके इस व्यवहार से दारोगा बाबू गुस्सा हो गये आर ै सब से पूछने लगे कि यह साधारण ब्राह्मण कौन ह ै ? जिसकी इतनी लोकप्रियता है। तब लोगों ने कहा कि यह कोई आम इंसान नहीं ह; ै यह जब आते हं ै तब जहानाबाद के डिपुटी मेजिस्ट्रेट खुद आकर मिल कर जाते हं ै। उन्हें यह भी बताया कि बड़े लाट साहब इनसे पूछकर ही जज, मेजिस्ट्रेट का चयन करते हं ै। इन सारी बातों को सुनकर दारोगा बाबू हर ै ान होकर चुप हो गये। उस समय इस प्रदेश में डॉक्टरी चिकित्सा का प्रचलन नहीं था। विद्यासागर महाशय ने निःशुल्क चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना की। बीरसिंह, बोथालिया, पथरा, मामूदपुरजस ै े गाँवों में उन्होंने आम लोगों की मुफ्त चिकित्सा के लिए केन्द्रों की स्थापना की। यहाँ तक की रोगाक्रांत लोगों के लिए साबूदाना, बताशा, मिसरी आदि की व्यवस्था भी उन्होंने करवायी। रोगियों के लिए उन्होंने स्वयं भी होमियोपथ ै ी चिकित्सा पद्धति का अध्ययन किया आर ै लोगों को दवाईयाँ दी। इस प्रकार उन्होंने चिकित्सा जगत में उन्नति के लिए भी सचेष्टा की।

'नन्दन कानन' का वर्तमान नया प्रवेश द्वार

शिक्षा व स्वास्थ्य, जनता के लिए

विद्यासागर महाशय ने विद्यार्थियों के लिए अनेकों विद्यालय की स्थापना की तथा दूसरों के घरों में काम करने वाले, चरवाहों, किसानों के लिए भी उन्होंने रात्रि पाठशाला की स्थापना की। शिक्षकों के वेतन एवं निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकों की व्यवस्था भी वे अपने बल-बूते किया करते थे। उन दिनों महिलाओं के शिक्षा का प्रचलन नहीं के बराबर था। बीरसिंह गाँव में उन्होंने प्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना की। भारतवर्ष में बालिकाओं की शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना

सर्वप्रथमविद्यासागरजीनेहीकियाथा।उनकेसत्प्रयासोंसेहीस्त्रीशिक्षाकेक्षेत्रमें संभ्रान्तलोगोंकेमनमेंउनकेप्रतिश्रद्धाजागृतहुईआर ै वेलोगअपनेघरकीबेटियोंको भीबाहरपढ़नेभेजनेलगे।इनसबमें बेथुन 'साहबनेबहुतउत्साहसेउनकीसहायता की।कोलकातामेंबेथुनविद्यालयआर ै बेथुनकॉलेजकीस्थापनाहुई।विद्यासागरजी केपरिश्रमएवंउत्साहसेउनदिनोंसरकारनेभीबहुतसारेबालिकाविद्यालयोंकी स्थापनाकरनेमेंमददकिया।मेट्रोपॉलिटनस्कूल कीउन्नतिकेलिएविद्यासागर

विद्यासागर महाशय के जन्म स्थान ग्राम 'वीरसिंह' जिला : मिदनापुर स्थित भवन

महाशयनेबहुतपरिश्रमकिया।विद्या,शिक्षा,समाजकिसीभीक्षेत्रमेंउनकीदेन अमूल्य थी;लेकिन इन सबसे उपर थी उनकी मानवीयता। अनावृष्टि के कारण बीरसिंहगाँवएवंउनकेआस-पासकेकुछगाँवोंमेंसूखापड़गयाथा।विद्यासागर महाशयनेअपनेघरमेंउनगाँवोंकेअधिकांशलोगोंकेभोजनकाप्रबन्धकियाआर ै बाकीलोगोंकोभोजनमिलेइसकाभीसमुचितइंतजामकिया;लेकिनइसकेबावजूद हालातनेजबविकरालरूपधारणकरलियातोविद्यासागरमहाशयनेसरकारसे बातचीतकिया।उनकेअनुरोधपरलेफ्टिनेंटगवर्नर' बिडन 'साहबनेगाँव-गाँवमें अन्न भण्डारस्थापितकरनेका आदेशदिया।एक बार वर्धमान जिलामें भयानक मलेरियाज्वरकाप्रकोपफल ै गया,विद्यासागर महाशयके घरके बहुतकरीबही मुस्लिमोंकीबस्तीथी,वहाँरहनेवालेमुस्लिमभाईयोंकीबस्तीमेंमलेरियानेभयानक रूपधारणकरलिया;वहाँरहनेवालेलोगबहुतहीगरीबथे,विद्यासागरमहाशयने अपने घर में डिस्पेंसरी खुलवाई आरै उनकी उचित चिकित्सा की व्यवस्था की। देशवासीज्वरएवंआष ै धियोंकेअभावमेंमररहेहं ै यहदेखकरविद्यासागरमहाशयने तत्कालीनलेफ्टिनेंटगवर्नर' ग्रे 'साहबसेबातचीतकी।' ग्रे 'साहबनेघटनाकी वास्तविकताकोसमझकरविद्यासागरमहाशयकेअनुरोधकोदेखतेहुएजगह-जगह

डिस्पेंसरी खुलवाई तथा दवाईयों के साथ-साथ अन्न के भण्डार की भी व्यवस्था करवाईताकिलोगबीमारीआर ै भूखसेबचसकें ।

विद्यासागरमहाशयकेचारित्रिकगुणों,अच्छेकार्योंकीसचेष्टाएवंनिष्ठा कोविदेशीलोगभीसम्मानकरतेथेआर ै उनकेसत्कार्योंमेंसहायताकरनेकोतत्पर रहतेथे ।यहभीएकअभिनवइतिहासह। ै 1841सालकेअन्तमेंअपनीपढ़ाईपूरीकर संस्कृत कॉलेज छोड़ते समय वहाँ के अध्यक्ष एवं शिक्षकों ने ईश्वरचन्द्र जी को 'विद्यासागर 'कीउपाधिसेअलंकृतकिया ।सुखाड़आर ै दुर्भिक्षकेसमयकंगालोंने उन्हें' दयाकासागर 'कीउपाधिदी ।महारानीविक्टोरियानेउन्हें' कम ै पेनियनऑफ इण्डियनसम्पेरर 'कीउपाधिप्रदानकी ।विद्यासागरजीनेअपनारास्तास्वयंबनाया था ।शिक्षाकेक्षेत्रमें,पढ़ाईकेक्षेत्रमें,समाजकल्याणकेक्षेत्रमेंउनकाबहुमूल्य अवदानकभीभीभुलायानहींजासकताह। ै

अन्तिम जीवन

अत्यन्तपरिश्रमआरै अपनेस्वास्थ्यकेप्रतिउदासीनताकीवजहसेउनका शरीररूग्णहोगयाथा ।जीवनकेअंतिमसमयमेंउन्होंने' करमाटाँड़ '(अबजिला: जामताड़ा, झारखण्ड राज्य में) जस ै ी जगह को चुना; चिकित्सकीय कारणों एवं मेट्रोपॉलिटनकॉलेजकेकार्योंकेकारणउन्हेंबार-बारकोलकाताजानापड़ताथा । अनेकोंरोगोंएवंउसकीयंत्रणाकेकारणउन्हेंअपनेशेषजीवनमेंअपारकष्टोंका सामनाकरनापड़ा ।शारीरिककष्टकेसाथ-साथअपारमानसिककष्टभीथा ।अपने एकमात्रपुत्र' नारायण 'केसाथउनकीबातचीततकनहींथी ।उनकीमतभिन्नताइतनी गहरीथीकिनारायणकेविवाहकेदोसालकेअन्दरहीउन्होंनेउन्हेंअपनीसम्पत्तिसे बेदखलकरदिया ।नारायणकीपत्नी' भवसुन्दरी 'कीमाँशारदादेवीनेअपनेपात्र ै के लिएकोर्टमेंआवेदनदेकरअन्तत:उनकीसमस्तसम्पत्तिकोआत्मसातकरप्राप्त किया ।यहसबनारायणकेसाथमिलकरहीशारदादेवीनेकियाथा ।13वींसावन 1298सालबांग्ला(अंग्रेजी29जुलाई1891)कोश्रीईश्वरचन्द्रविद्यासागरमहाशय कास्वर्गवासहोगया ।जिसव्यक्तिनेअपनासम्पूर्णजीवनमानवजातिकेकल्याणमें लगादिया;उसेहीअपनेजीवनकेअन्तसमयमेंअनेकोंशारीरिकरोगआर ै मानसिक कष्टकोलेकरइसनश्वरसंसारकोछोड़नापड़ा ।वेचलेगये,मगरउनकेद्वाराकिये गयेकार्यअमरहोगये ।उनकीचिंतनधारा,उनकी कर्मशीलताहमेशायादरहेगी;हम उन्हेंकभीभीभूलनहींपायेंगे ।नईपीढ़ीकेलोगउन्हेंजानें,यहीमेरीचेष्टाह। ै मेरीयह लेखनीहिन्दीभाषामाध्यममेंहोनेकेकारणज्यादासेज्यादालोगोंतकपहुँचेगीआर ै उनकेकार्योंकोजबलोगआत्मसातकरेंगेतोविद्यासागरजीकेकार्योंसेमेरीलेखनी भीधन्यहोजायेगी ।

❑